International Journal of Professional Development
Vol.11,No.1,Jan-June 2022 ISSN: 2277-517X (Print), 2279-0659 (Online
Impact Factor 3.148(IFSIJ)

स्मृति साहित्य में संस्कार : एक अध्ययन

ललिता (एमफ़िल)
संस्कृत पाली प्राकृत विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय ,कुरुक्षेत्र

भूमिका

मनुष्य एक प्रगतिशील प्राणी है । वह जन्म लेता है, शैशवास्था समाप्त कर बाल्यावस्था में आता है, उसके पश्चात् किशोरावस्था और प्रौढावस्था में पहुँचता है । विकास की इन सीढ़ियों पर पग बढ़ाते हुए अन्त में उसका पञ्चभौतिक शरीर पञ्चतत्वों में विलीन हो जाता है। भारतीय संस्कृति ने जीन के इस विकास को संस्कृत करने के लिए संस्कारों का आयोजन किया है।

अर्थ

"संस्कार" शब्द सम् पूर्वक कृ धातु से निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ आचार्य शबर स्वामी इस प्रकार कहते हैं

"संस्कारो नाम स भवति यस्मिन् जाते
पदार्थो भवति योग्यः कस्यचिदर्धस्य ।

अर्थात् संस्कार वह है, जिसके होने से कोई पदार्थ या व्यक्ति किसी कार्य के लिए योग्य हो जाता है। तंत्रवार्तिक के अनुसार- **"योग्यतां चादधानाः क्रिया संस्कारा इत्युच्यन्ते'** अर्थात् संस्कार वे क्रियाएँ अथवा रीतियाँ हैं ,जो योग्यता प्रदान करती है।

स्मृति साहित्य में संस्कार

स्मृति साहित्य द्वारा प्रतिपादित संस्कारों की सं० पर दृष्टिपात करना अनुचित नहीं होगा । गृह्यसूत्रों में संस्कारों की बारह से लेकर अठारह तक मानी गई हैं। आश्वलायन, गृह्यसूत्र जहाँ विवाह, गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म नामकरण, चूडाकर्म, अन्नप्राशन, उपनयन, समावर्तन, और अन्त्येष्टि की परिगणना करता है वहीं वैखानस गृह्यसूत्र ऋतुसङ्गमन, गर्भाधान, सीमान्त विष्णु वाले, जातकर्म उत्थान', नामकरण; अन्नप्राशन पारायण व्रतन्धविसर्ग, उपाकर्म, स० उत्सर्जन, समावर्तन और परिग्रहण इन अठारह संस्कारों को स्वीकार करता है।

गौतम धर्मसूत्र और गौतमस्मृति में चालीस संस्कार बताए गए हैं-गर्भाधान, पुंसवन,सीमन्तोनयन, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, चौल, उपनयन चारों वेद अर्थात् ऋग्वेद आरम्भ यजुर्वेद आरम्भ, सामवेद आरम्भ, अथर्ववेद आरम्भ समावर्तन विवाह, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ, भूतयन, ब्रह्मयज्ञ, अष्टका पाविश्राद्ध श्रावणी, चैत्री, अश्वयुजी, अन्धाधान, आग्रायण अग्निहोत्र, दर्शवौर्णमास यज्ञ, चातुर्मास्य, निरुद, पशुबन्ध,सौगामणी, अग्निष्टोम अविरात्र अत्यग्निष्टोम, षोडशी, वाजपेयी,अतिरात्र ।

व्यास ब्रह्मोक्त याज्ञवल्क्य शंख तथा मार्कण्डेय आदि ने सोलह संस्कारों का वर्णन किया हैं । वृद्ध हारित ने पाँच संस्कारों का वर्णन किया है जातकर्म, चौल, मौजीबन्धन और चक्रधारण मनु ने गर्भाधान से अन्त्येष्टि तक के संस्कार बताए हैं । "स्मृतिकारों ने नारी तथा पुरुष के संस्कारों के सम्बन्ध में स्पष्टरूपेण भेद किया है । ये समस्त संस्कार'(विवाह संस्कार के अतिरिक्त स्त्रियों के बिना मन्त्र के होते हैं।

अमन्त्रिका तु कार्येय स्त्रीणामवृदशेषतः
संस्कारार्थ शरीरस्य यथाकालं यथाक्रमम् ।
वैवाहिको विधि स्त्रीणां संस्कारो वैदिकः स्मृतः
पतिसेवा गुरौ वासो गृहर्थोऽग्नि परिक्रिया ॥

याज्ञवल्क्य व्यास तथा ब्रह्मोक्त याज्ञवल्क्य का भी यही हैं । हिन्दू धर्म में साधारणतया उक्त सभी संस्कारों में सोलह संस्कार ही मुख्य रूप से प्रचलित है ।

निष्कर्ष

अतः हम कह सकते हैं कि संस्कार से अभिप्राय शुद्धि की धार्मिक क्रियाओं तथा दैहिक एवं बौद्धिक परिष्कार के लिए किए जाने वाले अनुष्ठानों से है।"मनु के ही

अनुसार वे संस्कार वैदिक कर्मों के साथ करने चाहिए इससे इस लोक और परलोक में पुण्य की प्राप्ति होती है।

वैदिकैः कर्मभिः पुण्यै र्निदोषादिद्विर्जन्मनाम्
कार्य: शरीरसंस्कार : पावन प्रेत्य प्रेत्य चेह च ॥

संस्कारों के महत्व के विषय में शड्खलिखित का यह विचार भी ब्रह्म के सायुज्य अथवा मोक्ष की प्राप्ति के उद्देश्य को ही व्यक्त करता है –

संस्कारै: संस्कृत: पूर्वरुत्तरैरनुसंस्कृतः ।
नित्यमष्ट गुणैर्युक्तो ब्राह्मणो ब्राह्मलौकिकः ।
ब्राम्हां पदमवाप्नोति यस्मान्न च्यवते पुनः॥

संदर्भ ग्रथ सूची

1. मनुस्मृति: संपा .शिवराज आचार्य चौखम्बा प्रकाशन , वाराणसी
2. याज्ञवल्कयस्मृति ,जगनाथ शास्त्री चौखम्बा प्रकाशन , वाराणसी
3. वैदिक साहित्य का इतिहास,वाचस्पति गैरोला,विद्या भवन राष्ट्रभाषा ग्रन्थमाला, चौखम्बा प्रकाशन , वाराणसी
4. संस्कृत साहित्य का इतिहास ,उमाशंकर ऋषि, चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी
5. समाज शास्त्र ,हेरी एम. जाॅनसन पृष्ठ 147
6. मीमांसासूत्र ,भाष्य -3/1/3
7. हिन्दू संस्कार विधि पृष्ठ 59
8. गौतम 8/3
9. बुध , अध्याय -1
10. व्यास 1/13-15
11. ब्रम्होक्त याज्ञवल्क्य 8/359 -361
12. शंख 2/1-12
13. मार्कंडेय पृष्ठ 76
14. मनुस्मृति 2/116
15. वही - 2/66-67
16. याज्ञवल्क्य 1/15 -16
17. ब्रम्होक्य याज्ञवल्क्य 8/6